बैठकी होली

भाग 2

अवधि : 01.17

शब्द : 188

	वक्ता	
00.08	डॉ. शेखर पाठक, संपादक, पहाड	मध्यकाल के बहुत सारे जो कवि शायर जो थे, उनका बहुत सारा कावित्य जो है हमारे यहां होली में आया और बहुत जगह ऐसे गायक और होलियार थे जिन्होंने अपनी रचनायें भी बनाई।
00.19	निरंजन पंत	अच्छा एक बडी मजे की बात ये है कि ज्यादातर तो धार्मिक प्रसंग होते हैं पर उसमें जो हमारे सामाजिक रिश्तों की जो खटास वगैरह भी होती है उसका भी बडा अच्छा विवरण मिल जाता है। ‘ जल कैसे भरूं यमुना गहरी ठाढी भरूं राजा राम जी देखें न्यूढी भरूं भीगे चुनरी जल कैसे भरूं यमुना गहरी माठी चलूं घर सास बुरी है छाटी चलूं छलकै गगरी

		सासू खयारी, ननद धतियारी कासे कहूं बतिया सगरी ‘
00.48	कैलाश चंद्र पांडे	मैं बहुत सी होलियां, जिसमें रंग, पिचकारी और ये सब है, मगर एक होली, बहुत सुंदर उसका भाव जो है, उसमें है - अब कित जाये छिपूं, मोरी दईया ननद को छैल मोहे ढूंढत फिरत है फिर उसका अंतरा है - लाज भरी गारी बंसी मैं मेरो ही नाम लेत कन्हईया अब कित जात छिपूं मोरी दईया